

# उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी मानविकी विद्याशाखा

NAAC B++ Grade & Established in 2005 by an act of Uttarakhand Legislative Assembly

Recognized by UGC, DEB, listed in AIU

## Programme Project Report (PPR)

कार्यक्रम परियोजना रिपोर्ट

संस्कृत ( स्नातकोत्तर )

संस्कृत एवं प्राकृत भाषाएँ विभाग



उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, नैनीताल - 263139

तीनपानी बाईपास रोड, ट्रॉन्स पोर्ट नगर के पीछे

फोन नं. 05946- 261122, 261123, Fax No.- 05946-264232,

E-mail- [info@uou.ac.in](mailto:info@uou.ac.in), <http://uou.ac.in>

**(i) कार्यक्रम का लक्ष्य एवं उद्देश्य: (Programme's mission and objectives):** भारत सरकार के शिक्षामन्त्रालय के निर्देशों के अनुसार उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, मानविकी विद्याशाखा के संस्कृत एवं प्राकृत भाषाएँ विभाग द्वारा स्नातकोत्तर संस्कृत पाठ्यक्रम चार सत्रों तथा दो वर्षों में विभक्त है। संस्कृत कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से उच्च शिक्षा को उन दूरस्थ क्षेत्रों तक पहुँचाना है, जहाँ परम्परागत (संस्थागत) शिक्षा व्यवस्था का प्रायः अभाव है। इसका उद्देश्य उन लोगों को शिक्षा से जोड़ना है जो किसी कारणवश उच्च शिक्षा से वंचित हैं या बीच में शिक्षा छोड़ चुके हैं। संस्कृत साहित्य में विद्यमान विविध ज्ञान-विज्ञान प्रदान करना उसके जीवन को नैतिक एवं सदाचार व सदाचारपूर्ण बनाना तथा विविध कलाकौशलों के प्रशिक्षण से जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समृद्ध बनाना तथा विविध कलाकौशल के प्रशिक्षण से जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समर्थ बनाना इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है। इस लक्ष्य की पूर्ति हेतु पाठ्यक्रम में संस्कृतसाहित्य के पद्यकाव्य, गद्यकाव्य, नाटक, काव्यशास्त्र, व्याकरण, भारतीय रंगमंच, संस्कृत एवं संरचना, नीतिशास्त्र, मीमांसा, दर्शन, संस्कृतउपन्यास, वैदिक अध्ययन, निरूक्त, योग, वास्तुकला, आदि विषय सम्मिलित किए गए हैं। इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्रों का सर्वाङ्गीण विकास हो तथा वे एक योग्य नागरिक बनकर राष्ट्र के विकास में सहयोगी बनें यही इसका मुख्य उद्देश्य है। विशेषतः संस्कृत के माध्यम से भाषा सम्वर्द्धन भी प्रमुख उद्देश्यों में से एक है।

**(ii) कार्यक्रम की प्रासंगिकता: (Relevance of the program with HEI's Mission and Goals):** इस कार्यक्रम कि प्रासंगिकता दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से शिक्षार्थियों में विभिन्न प्रकार की भाषिक दक्षता उत्पन्न करना व परम्परा से परिचित कराना भी है। कुशलताओं आदि में विस्तार करना, गुणवत्ता में विस्तार करके रोजगारपरक बनाना व इसके साथ-साथ उन मानव संसाधनों के लिए भी यह पाठ्यक्रम उपयुक्त है जो रोजगार में रहने के साथ-साथ अपनी शिक्षा व कुशलताओं का विकास करना चाहते हैं। स्नातकोत्तर स्तर पर संस्कृत भाषा के व्यापक अध्ययन की पृष्ठभूमि तैयार करना भी स्नातक संस्कृत की प्रासंगिकता है। साथ ही स्नातक संस्कृत करने वाले छात्र, अन्य प्रशिक्षण के पश्चात् हाई स्कूल (10<sup>th</sup>) स्तर व इण्टरमीडिएट (12<sup>th</sup>) की कक्षाओं में अध्यापन भी कर सकें, यह भी इस कार्यक्रम का प्रयोजन है। मुक्त और दूरस्थ शिक्षा पद्धति से इस कार्यक्रम को अपने अध्ययन द्वारा भी संचालित करने के कारण दूरस्थ क्षेत्रों में रहने वाले सभी वर्गों को संस्कृत शिक्षा का अवसर प्राप्त होता है जो कतिपय कारणों से उच्च शिक्षा से वंचित रह जाते हैं।

**(iii) शिक्षार्थियों के संभावित लक्ष्य एवं प्रकृति: (Nature of prospective target group of learners):** किसी भी विषय में स्नातक उपाधि प्राप्त कोई भी इस कार्यक्रम में प्रवेश की पात्रता रखते हैं। प्रदेश में विशेष रूप से वे भी इसमें प्रतिभाग करते हैं जो हाईस्कूल स्तर के शिक्षक तो हैं परन्तु इंटर कालेज में प्रवक्ता पद पर उन्नति चाहते हैं। अथवा अन्य उद्देश्यों की पूर्ति करना चाहते हैं। संस्कृत विषय का यह पाठ्यक्रम उन छात्रों को केन्द्र में रखकर विकसित किया गया है जो संस्कृत के क्षेत्र में शिक्षक, शोधकर्ता, लेखक-विचारक के रूप में तथा अन्य संबंधित क्षेत्र में अपने को स्थापित करना चाहते हैं किन्तु सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक एवं अन्य कारणों से संस्कृत की उच्च शिक्षा से वंचित हैं या बीच में ही साहित्य-शिक्षा छोड़ चुके हैं। संस्कृत विषय के शिक्षार्थी इस पाठ्यक्रम से संबंधित स्व अध्ययन पाठ्य सामग्री, दृश्य एवं श्रव्य व्याख्यान, परामर्श सत्रों, कार्यशालाओं, सूचना प्रौद्योगिकी के उपकरणों (जैसे कम्प्यूटर, इंटरनेट, यू-ट्यूब, मोबाईल, स्काईप, वेबसाइट आदि) एवं संचार के माध्यम से बिना किसी बन्धन के कहीं भी कभी भी ज्ञान अर्जित कर सकता है।

(iv) मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से स्नातकोत्तर (संस्कृत) कार्यक्रम की उपयुक्तता या विशिष्ट कौशल / क्षमता प्राप्त करने के लिए उपयुक्तता के आधार – ( **Appropriateness of programme to be conducted in Open and Distance Learning and/or Online mode to acquire specific skills and competence**): मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण माध्यम से इस पाठ्यक्रम को संचालित कर शिक्षार्थी को अन्य शिक्षण प्रणाली की अपेक्षा संस्कृत विषय की बारीकियों से सरलता से अवगत कराया जा सकता है और संबंधित क्षेत्र में अधिक दक्ष बनाया जा सकता है। इसका प्रमुख कारण है कि मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण माध्यम में ज्ञान प्राप्ति के विभिन्न माध्यम जैसे स्वअध्ययन पाठ्य सामग्री, दृश्य एवं श्रुत्य व्याख्यान आदि शिक्षार्थी को केन्द्र में रखकर तैयार किए जाते हैं एवं सूचना प्रौद्योगिकी के उपकरण (जैसे कम्प्यूटर, इंटरनेट, यू-ट्यूब, मोबाईल, स्काईप, वेबसाइट आदि), संचार माध्यमों आदि शिक्षार्थी के अनुसार कार्य करते हैं।

- इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र संस्कृत भाषा में दक्षता प्राप्त करेंगे।
- संस्कृत विषय की जानकारी हेतु प्रवेश प्राप्त करने वाले छात्रों को अध्ययन की सुगमता प्रदान करना।
- सहज, सुबोध और अध्यापन शैली में लिखित सामग्री के द्वारा विना कक्षा शिक्षण के ही अधिगम कराया जाना।
- संस्कृतकाव्य, काव्यशास्त्र, व्याकरण, आदि विभिन्न विषयों को पढ़ाने में सक्षम होंगे।
- दर्शनशास्त्रों के अध्ययन से छात्रों को तार्किक एवं तात्विक दृष्टि विकसित होगी जिससे समाज से आनाचार, भ्रष्टाचार, अन्धविश्वास एवं कुरीतियों के उन्मूलन होगा।
- आध्यात्मिक एवं नैतिक शिक्षा से छात्रों का जीवन उत्कृष्ट तथा सदाचारमय होगा जिससे एक श्रेष्ठ राष्ट्र एवं विश्व का निर्माण होगा। छात्र और शिक्षक के बीच सामग्री में ही संवाद की उपस्थिति से विषय को रुचिकर बनाना।
- तकनीकी के समावेश से पाठ्यसामग्री को आकर्षक व सुगम बनाकर छात्रों तक पहुंचाना।

(v) **निर्देशात्मक संरचना (Instructional Design)**: संस्कृत विषय का इस पाठ्यक्रम के अन्तर्गत संस्कृत साहित्य एवं भाषा के अध्ययन को सम्मिलित किया गया है। संस्कृत विषय के पाठ्यक्रम की अवधि न्यूनतम 2 से अधिकतम 6 वर्ष तक की होगी। पाठ्यक्रम कुल 72 श्रेयांक (32 श्रेयांक प्रथमवर्ष (प्रथम एवं द्वितीय सेमेस्टर) का होगा। पाठ्यक्रम को खण्डों और इकाईयों में विभक्त किया गया है, जिसके लिए श्रेयांक (Credit) निश्चित किये गये हैं। दूरस्थ शिक्षा के मैनुअल के अनुरूप पाठ्यक्रमों की अधिसंरचना की जाती है जो इस प्रकार है –

- पाठ्यक्रम का मात्रात्मक मूल्य
- विषय का संरचनागत प्रस्तुतीकरण किया जाता है।
- संस्कृत में स्नातकोत्तर के प्रथम,द्वितीय,तृतीय,चतुर्थ सेमेस्टर के कुल 18 पाठ्यक्रम 72 श्रेयांक के हैं।
- दूरस्थ शिक्षा के मैनुअल के अनुरूप पाठ्यक्रमों की अधिसंरचना की जाती है जो इस प्रकार है। पाठ्यक्रम का मात्रात्मक मूल्य, विषय का संरचनागत प्रस्तुतीकरण किया जाता है। परास्नातक संस्कृत के प्रथम वर्ष में 8 पाठ्यक्रम 32 श्रेयांक के तथा अंतिम वर्ष में 10 पाठ्यक्रम 40 श्रेयांक के हैं।
- स्नातकोत्तर संस्कृत पाठ्यक्रमों का विवरण निम्नलिखित है।

**Name and code of courses**

<b>M.A. I Sem</b>		<b>M.A. II Sem</b>	
वेद एवं निरूक्त -01	MASL-501	वेद एवं निरूक्त-02	MASL-505
संस्कृत भाषाविज्ञान एवं व्याकरण-01	MASL 502	संस्कृत भाषाविज्ञान एवं व्याकरण-02	MASL- 506
भारतीय दर्शन -01	MASL -503	भारतीय दर्शन-02	MASL -507
नाटक एवं नाट्यशास्त्र-01	MASL- 504	नाटक एवं नाट्यशास्त्र-02	MASL- 508
<b>M.A. III Sem</b>		<b>M.A. IV Sem</b>	
काव्यशास्त्र-01	MASL- 601	काव्यशास्त्र-02	MASL- 606
गद्य एवं पद्य काव्य-01	MASL - 602	गद्य एवं पद्य काव्य-02	MASL -607
सिद्धान्तकौमुदी, कारक एवं समास-01	MASL - 603	सिद्धान्तकौमुदी , कारक एवं समास-02	MASL - 608
नाटक एवं नाटिका-01	MASL- 604	नाटक एवं नाटिका-02	MASL- 609
संस्कृत साहित्य की आधुनिक प्रतिभाएं-1	MASL- 605	संस्कृत साहित्य की आधुनिक प्रतिभाएं-02	MASL - 610

**(vi) प्रवेश एवं मूल्यांकन की प्रक्रिया:(Procedure for admissions, curriculum transaction and evaluation):**

स्नातक उपाधि प्राप्त कोई भी छात्र परास्नातक संस्कृत विषय में प्रवेश का पात्र है | पाठ्यक्रमों में समय समय पर आवश्यकतानुसार संशोधन और परिवर्तन भी किया जाता है | वर्ष में दो बार ग्रीष्मकालीन और शीतकालीन प्रवेश की प्रक्रिया संचालित की जा रही | छात्रों को स्वनिर्मित अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराई जाती है | सत्रीय कार्यों और उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन सक्षम परीक्षकों द्वारा कराये जाते हैं |

Master of Arts (Sanskrit) मास्टर ऑफ आर्ट्स (संस्कृत)

MASL-21 Credits-72

Course Code	Course Name	Cre	Total Marks dits (Th./Assign.)
<b>SEMESTER I</b>			
MASL-501	वेद एवं निरूक्त 01	04	100 (70/30)
MASL-502	संस्कृत भाषाविज्ञान एवं व्याकरण -01	04	100 (70/30)
MASL-503	भारतीय दर्शन 01	04	100 (70/30)
MASL-504	नाटक एवं नाट्यशास्त्र 01	04	100 (70/30)
<b>SEMESTER II</b>			
MASL-505	वेद एवं निरूक्त 02	04	100 (70/30)
MASL-506	संस्कृत भाषाविज्ञान एवं व्याकरण -02	04	100 (70/30)
MASL-507	भारतीय दर्शन 02	04	100 (70/30)
MASL-508	नाटक एवं नाट्यशास्त्र 02	04	100 (70/30)
<b>SEMESTER III</b>			
MASL-601	काव्यशास्त्र 01	04	100 (70/30)
MASL-602	गद्य एवं पद्य काव्य01	04	100 (70/30)
MASL-603	सिद्धान्तकौमुदी ,कारक एवं समास- 01	04	100 (70/30)
MASL-604	नाटक एवं नाटिका 01	04	100 (70/30)
MASL-605	संस्कृत साहित्य की आधुनिक प्रतिभाएं 01	04	100 (70/30)

SEMESTER IV				
MASL-606	काव्यशास्त्र 02		04	100 (70/30)
MASL-607	गद्य एवं पद्य काव्य02		04	100 (70/30)
MASL-608	सिद्धान्तकौमुदी ,कारक एवं समास- 02		04	100 (70/30)
MASL-609	नाटक एवं नाटिका 02		04	100 (70/30)
MASL-610	संस्कृत साहित्य की आधुनिक प्रतिभाएं 02		04	100 (70/30)

- (vii) प्रयोगशाला एवं पुस्तकालय संसाधनों की आवश्यकता (Requirement of the laboratory support and Library Resources): विषय से सम्बन्धित समस्याओं के समाधान व निराकरण हेतु पुस्तकालय में सन्दर्भ पुस्तकें उपलब्ध हैं। अध्ययन केंद्र में भी इस तरह की सुविधा छात्रों को उपलब्ध कराई जाती है।
- (viii) कार्यक्रम की अनुमानित लागत और प्रावधान ( Cost estimate of the programme and the provisions): एम0ए0 संस्कृत के दोनों वर्षों में कुल 18 प्रश्नपत्रों के लेखन, सम्पादन व मुद्रण आदि कार्यों में अनुमानित लागत लगभग ₹0 22,00000/- लाख से अधिक है।

#### PROGRAMME SUMMARY & FEE STRUCTURE

Programme Name And Abbreviation	Programme Code	Eligibility	Duration(In Yrs)		SLM	Mode Of Exam (Annual / Sem)	Year/ Sem	Details Of Fee ( `Rs.)						
			Minimum	Maximum				Programme	Project/ Lab Workshop	Exam	Practical	Miscellaneous	Degree Fee	Total
MASTER OF ARTS (SANSKRIT)	MASL-21	Graduation in any stream	2	6	Hindi	Semester	I	1500	-	1000	-	150		2650
							II	1500	-	1000	-	-		2500
							III	1500		1250				2750
							IV	1500		1250		300	3050	

- (ix) गुणवत्ता नीति-तंत्र और कार्यक्रम के संभावित परिणाम: (Quality assurance mechanism and expected programme out comes): आवश्यकतानुसार विषय के सक्षम विशेषज्ञों के द्वारा पाठ्यक्रम को नवीन बनाने के लिए कार्य किया जाता है। साथ ही अध्ययन सामग्री के लेखन में सावधानी का पालन करते हुए सक्षम इकाई लेखकों के द्वारा विशिष्ट पाठ्य सामग्री का सरल भाषा में लेखन कराया जाता है। फलस्वरूप संस्कृत के अध्येताओं को विषय का स्तरीय ज्ञान प्राप्त करने में सुविधा प्राप्त होती है। जिससे वे प्रतियोगी परीक्षाओं में भी सफलता प्राप्त कर लेते हैं। साथ ही नेट परीक्षा उत्तीर्ण कर उच्च शिक्षा में भी जाते हुए दिखाई देते हैं।

- संस्कृत विषय के इस पाठ्यक्रम के भविष्यगामी परिणाम निम्नलिखित होंगे :-
- विद्यार्थी संस्कृत विषय की विविध विधाओं तथा शास्त्र की समुचित विशेषज्ञता हासिल कर सकेंगे।
- विद्यार्थी संस्कृत विषय के अन्तर्गत विभिन्न विद्यालयों एक संस्थाओं में शिक्षक के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान करने में सक्षम होंगे।
- साहित्य की समुचित परम्परा के ज्ञान के पश्चात विद्यार्थी लेखक –विचारक के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकेंगे।

- विविध प्रतियोगी परीक्षाओं में भाषा एवं साहित्य परम्परा के ज्ञान के आधार पर सफलता प्राप्त कर सकेंगे ।
- साहित्य की परम्परा के गहन अध्यापन द्वारा छात्रों के हृदय में मानवीय संवेदना, मानवोचित विवेक एवं मूल्यों का निर्माण संभव होगा ।
- स्व – अध्ययन सामग्री के परिवर्द्धन – संवर्धन हेतु समय-समय पर विषय वस्तु की समीक्षा की जायेगी तथा विषय को अधुनातन रूप में परखा जाएगा । इच्छुक विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम का निरन्तर प्रसार-प्रचार किया जाएगा ।

### स्नातकोत्तर: पाठ्यक्रम

प्रथम सेमेस्टर - एम0ए0एस0एल – 501

वेद एवं निरूक्त

#### खण्ड 1. वैदिक सूक्त

- इकाई 1 . इन्द्र सूक्त 1/15  
 इकाई 2. पृथिवी सूक्त 12/1  
 इकाई 3. नासदीय सूक्त 10/129  
 इकाई 4. सामनस्य सूक्त 3/30  
 इकाई 5. राष्ट्रभिर्वर्धनम् 1-29  
 इकाई 6. हिरण्यगर्भ सूक्त 1-121

#### खण्ड 2 . निरूक्त

- इकाई 1. निरूक्त का महत्व  
 इकाई 2. शब्द का नित्यत्व एवं भाव विकारों का विवेचन  
 इकाई 3. निरूक्त के अनुसार शब्दों का विभाजन, भाव एवं सत्व  
 इकाई 4. निरूक्त के प्रथम अध्याय के तृतीय पाद पर्यन्त भाग की व्याख्या  
 इकाई 5. निरूक्त के प्रथम अध्याय के चतुर्थ, पंचम एवं षष्ठ पाद की व्याख्या

प्रथम सेमेस्टर - एम0ए0एस0एल – 502

संस्कृत भाषाविज्ञान एवं व्याकरण

#### प्रथम खण्ड – भाषा विज्ञान

- इकाई 1: भाषा का उद्गम और विकास  
 इकाई 2: भाषा विज्ञान, स्वरूप अन्य विज्ञानों से सम्बन्ध  
 इकाई 3: संस्कृत एवं प्रमुख भारोपीय भाषाएं  
 इकाई 4: -संस्कृत एवं प्राचीन आर्य भाषाएं

#### द्वितीय खण्ड – रूप विज्ञान

- इकाई 1: संस्कृत पद संरचना  
 इकाई 2: उपसर्ग तथा निपात  
 इकाई 3: आख्यात पद रचना

प्रथम सेमेस्टर - एम0 ए0 एस0 एल – 503

भारतीय दर्शन

#### खण्ड -1 अद्वैतवेदान्त

- इकाई 1- विशिष्टाद्वैतवेदान्त दर्शन का सिद्धान्त  
 इकाई 2- द्वैत वेदान्त दर्शन का सिद्धान्त  
 इकाई 3- द्वैताद्वैत वेदान्त दर्शन का सिद्धान्त

---

## खण्ड 2- सांख्यकारिका

---

- इकाई 1- सांख्यदर्शन का संक्षिप्त इतिहास एवं तत्व मीमांसा  
इकाई 2- दुःखत्रय, सत्कार्यवाद पुरुष –बहुत्व, प्रकृति –पुरुष समबन्ध  
इकाई 3- सांख्यकारिका 1 से 10 मूल पाठ, अर्थ व्याख्या  
इकाई 4- सांख्यकारिका 11 से 20 मूल पाठ, अर्थ, व्याख्या  
इकाई 5 – सांख्यकारिका 21 से 30 मूल पाठ, अर्थ, व्याख्या
- 

## खण्ड 3- वेदान्तसार

---

- इकाई 1- वेदान्त दर्शन का ऐतिहासिक स्वरूप  
इकाई 2- वेदान्तसार के प्रमुख सिद्धान्त का समीक्षक  
इकाई 3- मंगलाचरण से अनुबन्ध चुतुष्टय तक  
इकाई 4- आवरण एवं विक्षेप शक्ति  
इकाई 5- सूक्ष्म शरीर एवं पंचीकरण
- 

प्रथम सेमेस्टर - एम0ए0एस0एल – 504

नाटक एवं नाट्यशास्त्र

---

### प्रथम खण्ड – नाट्यशास्त्र प्रथम अध्याय

---

- इकाई 1: नाट्यशास्त्र का परिचय  
इकाई 2: नाट्यशास्त्र के टीकाकारों एवं उनके सिद्धान्तों का परिचय  
इकाई 3: नाट्यशास्त्र का प्रतिपाद्य  
इकाई 4: नाट्यशास्त्र प्रथम अध्याय पूर्वार्ध (अर्थ एवं व्याख्या)  
इकाई 5: नाट्यशास्त्र प्रथम अध्याय उत्तरार्ध (अर्थ एवं व्याख्या)
- 

### द्वितीय खण्ड – दशरूपक प्रथम एवं द्वितीय प्रकाश

---

- इकाई 1: रूपक भेद एवं सामान्य परिचय  
इकाई 2: नृत्य पंचसन्ध्यको का विवेचन  
इकाई 3: अर्थोपक्षेपक, नायक-नायिका निरूपण  
इकाई 4: दशरूपक के अनुसार रस मीमांसा  
इकाई 5: दशरूपक प्रथमप्रकाश  
इकाई 6: दशरूपक द्वितीय प्रकाश
- 

द्वितीय सेमेस्टर - एम0ए0एस0एल – 505

वेद एवं निरुक्त

---

### खण्ड 3. वेदान्त - उपनिषद्

---

- इकाई 1. उपनिषद् व्युत्पत्ति, महत्व एवं प्रतिपाद्य  
इकाई 2. प्रमुख उपनिषदों का सामान्य परिचय  
इकाई 3. भारतीय दर्शन में उपनिषदों का योगदान  
इकाई 4. ईशोपनिषद् 18 मन्त्र अर्थ एवं व्याख्या सहित
- 

### खण्ड 4. पाणिनीय शिक्षा

---

- इकाई -1 वेदांग परिचय  
इकाई -2 वेदांगों में शिक्षा का महत्व  
इकाई -3 पाणिनीय शिक्षा के अनुसार उच्चारण विधि

- इकाई 4. पाणिनीय शिक्षा के अर्धांश की व्याख्या  
इकाई 5. पाणिनीय शिक्षा के शेष अंशों की व्याख्या

**द्वितीय सेमेस्टर - एम0ए0एस0एल – 506**

**संस्कृत भाषाविज्ञान एवं व्याकरण**

**खण्ड –1 ध्वनि विज्ञान**

- इकाई 1: संस्कृत ध्वनियों का विकास क्रम  
इकाई 2 : ध्वनि परिवर्तन के कारण तथा दिशायेँ  
इकाई 3: ध्वनि नियम – ग्रिम, ग्रासमान, वर्नर  
इकाई 4: वाक्य - रचना

**खण्ड – 2 षड्लिंग प्रकरण**

- इकाई 1: अजन्त पुल्लिंग राम शब्द  
इकाई 2: अजन्त पुल्लिंग राम शब्द द्वितीया- सप्तमी  
इकाई 3: अजन्त पुल्लिंग सर्वादिगण  
इकाई 4: अजन्त पुल्लिंग हरि एवं गुरु शब्द  
इकाई 5: अजन्त पुल्लिंग पति एवं पितृ शब्द  
इकाई 6: अजन्त स्त्रीलिंग रमा शब्द

**द्वितीय सेमेस्टर - एम0 ए0 एस0 एल – 507**

**भारतीय दर्शन**

**खण्ड 1 - जैन एवं चार्वाक**

- इकाई 1- जैनमत का इतिहास  
इकाई 2- जैन दर्शन का सिद्धान्त भाग - 1  
इकाई 3- जैन दर्शन का सिद्धान्त भाग - 2  
इकाई 4- चार्वाक दर्शन का परिचय एवं सिद्धान्त  
इकाई 5- चार्वाकीय सिद्धान्तों की अन्य भारतीय दर्शनों में आंशिक उपस्थिति  
इकाई 6- चार्वाक दर्शन का वर्तमान व्यावहारिक व सांसारिक जीवन से सम्बन्ध

**खण्ड 2 - न्याय दर्शन**

- इकाई 1 - न्याय दर्शन का संक्षिप्त इतिहास  
इकाई 2 - तर्क भाषा, प्रमेयों के नाम, प्रमाण कारण एवं उनका स्वरूप  
इकाई 3- प्रत्यक्ष प्रमाण एवं इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष  
इकाई 4 - तर्क भाषा, अनुमान प्रमाण, व्याप्ति एवं उसके भेदों की मीमांसा  
इकाई 5 - प्रमेय पदार्थ निरूपण, स्वार्थानुमान, परार्थानुमान, हेत्वाभास

**द्वितीय सेमेस्टर - एम0ए0एस0एल – 508**

**नाटक एवं नाट्यशास्त्र**

**खण्ड:1 उत्तररामचरितम् का विश्लेषण**

- इकाई 1 : भवभूति एवं उनकी कृतियों का सामान्य परिचय  
इकाई 2 : उत्तररामचरितम् का नाट्यशास्त्रीय मूल्यांकन



इकाई 3 : उत्तररामचरितम् के प्रधान एवं गौण रसों की मीमांसा

इकाई 4 : उत्तररामचरितम् के पात्रों का चरित्र-चित्रण

इकाई 5: उत्तररामचरितम् की भाषा-शैली

---

**खण्ड:2 उत्तररामचरितम् प्रथम एवं द्वितीय अंक**

---

इकाई 1: उत्तररामचरितम् प्रथम अंक का पूर्वार्द्ध

इकाई 2: उत्तररामचरितम् प्रथम अंक का उत्तरार्द्ध

इकाई 3: उत्तररामचरितम् द्वितीय अंक का पूर्वार्द्ध

इकाई 4: उत्तररामचरितम् द्वितीय अंक का उत्तरार्द्ध

---

**खण्ड:3 उत्तररामचरितम् तृतीय एवं चतुर्थ अंक**

---

इकाई 1: उत्तररामचरितम् तृतीय अंक का पूर्वार्द्ध

इकाई 2: उत्तररामचरितम् तृतीय अंक का उत्तरार्द्ध

इकाई 3: उत्तररामचरितम् चतुर्थ अंक का पूर्वार्द्ध

इकाई 4: उत्तररामचरितम् चतुर्थ अंक का उत्तरार्द्ध

---

**तृतीय सेमेस्टर - एम0ए0एस0एल – 601**

**काव्यशास्त्र-भाग-01**

---

**खण्ड 1. काव्यशास्त्र का इतिहास**

---

इकाई-01 संस्कृत पद्य साहित्य का इतिहास-महाकाव्य का लक्षण, उत्पत्ति-विकास, रामायण, महाभारत का संक्षिप्त परिचय

इकाई-02 संस्कृत गद्य साहित्य की परम्परा

इकाई-03 संस्कृत नाटकों का उद्भव एवं विकास

---

**खण्ड 2. काव्यशास्त्र की ऐतिहासिक परम्परा**

---

इकाई-01 भरत, भामह, दण्डी, रूद्रट का जीवन वृत्त, समय, कृतित्व

इकाई-02 उद्भट, वामन, कुन्तक, जीवनवृत्त, समय, कृतित्व

इकाई-03 मम्मट, विश्वनाथ, आनन्दवर्धन का जीवनवृत्त, समय, कृतित्व

इकाई-04 अभिनवगुप्त, राजशेखर, धनंजय, भोजराज का जीवनवृत्त, समय, कृतित्व

इकाई-05 रामचन्द्र -गुणचन्द्र, शारदातनय, रूपागोस्वामी, पंडितराज जगन्नाथ

---

**तृतीय सेमेस्टर - एम0ए0एस0एल – 602**

**गद्य एवं पद्य काव्य-भाग-01**

---

**खण्ड 1. प्रचीन गद्य कवि**

---

इकाई 1. संस्कृत गद्यकाव्य की परम्परा

इकाई 2. सुबन्धु

इकाई 3. बाणभट्ट

इकाई 4. आचार्य दण्डी

---

**खण्ड 2. दशकुमारचरितम्**

---

इकाई 1. दशकुमारचरितम् का रचनाविधान एवं वैशिष्ट्य

इकाई 2. प्रथम उच्छ्वास, वर्ण्य विषय (प्रसंग, व्याख्या, भावार्थ)

इकाई 3. द्वितीय उच्छ्वास, वर्ण्य विषय (प्रसंग, व्याख्या, भावार्थ)

- इकाई 4. तृतीय उच्छ्वास, वर्ण्य विषय (प्रसंग, व्याख्या, भावार्थ)  
इकाई 5. चतुर्थ उच्छ्वास, वर्ण्य विषय (प्रसंग, व्याख्या, भावार्थ)  
इकाई 6. पंचम उच्छ्वास, वर्ण्य विषय (प्रसंग, व्याख्या, भावार्थ)  
**तृतीय सेमेस्टर - एम0ए0एस0एल - 603**

**सिद्धान्तकौमुदी, कारक एवं समास-भाग-01**

**खण्ड 1 सिद्धान्तकौमुदी - कारक प्रकरण**

- इकाई - 1 प्रथमा एवं द्वितीया विभक्ति - सूत्र, वृत्ति उदाहरण सहित व्याख्या  
इकाई - 2 तृतीया विभक्ति - सूत्र, वृत्ति उदाहरण सहित व्याख्या  
इकाई - 3 चतुर्थी विभक्ति - सूत्र, वृत्ति एवं उदाहरण सहित व्याख्या  
इकाई - 4 पंचमी विभक्ति - सूत्र, वृत्ति एवं उदाहरण सहित व्याख्या  
इकाई - 5 षष्ठी विभक्ति - सूत्र, वृत्ति एवं उदाहरण सहित व्याख्या  
इकाई - 6 सप्तमी विभक्ति - सूत्र, वृत्ति एवं उदाहरण सहित व्याख्या

**खण्ड 2 सिद्धान्तकौमुदी - भ्वादिगण रूप सिद्धि**

- इकाई - 1 सूत्र, वृत्ति, अर्थ, सहित भू धातु की रूप सिद्धि  
इकाई - 2 लट, लृट, लोट, लंड्., विधिलिंग लकारों में श्रु, गम्, एध्, धातु रूपों की सिद्धि  
इकाई - 3 णीञ्, पच्, भज्, यच्, इन चार धातुओं की व्याख्या सहित रूप सिद्धि  
इकाई - 4 सूत्र, वृत्ति, अर्थ, व्याख्या अद, तथा यु धातुओं की रूप सिद्धि  
इकाई - 5 सूत्र, वृत्ति, अर्थ, व्याख्या, अस् तथा दुह, धातुओं की रूप सिद्धि

**तृतीय सेमेस्टर - एम0ए0एस0एल - 604**

**नाटक एवं नाटिका-भाग-01**

**खण्ड -1 मृच्छकटिकम् प्रकरण**

- इकाई :1 नाट्य साहित्य का उद्भव एवं विकास  
इकाई :2 महाकवि शूद्रक का परिचय  
इकाई :3 मृच्छकटिकम् के प्रमुख पात्रों का चरित्र चित्रण  
इकाई :4 मृच्छकटिकम् में चित्रित सामाजिक एवं राजनीतिक चित्रण

**खण्ड -2 मृच्छकटिकम् व्याख्या**

- इकाई :5 मृच्छकटिकम् प्रथम अंक श्लोक संख्या 1 से 20 तक  
इकाई :6 मृच्छकटिकम् प्रथम अंक श्लोक संख्या 21 से 40 तक  
इकाई :7 मृच्छकटिकम् प्रथम अंक श्लोक संख्या 41 से 58 तक  
इकाई :8 द्वितीय अंक श्लोक संख्या 1 से 20 तक  
इकाई :9 तृतीय अंक श्लोक संख्या 1 से 15 तक

**खण्ड -3 मृच्छकटिकम् व्याख्या**

- इकाई :10 तृतीय अंक श्लोक 16 से 30 मूल पाठ व्याख्या  
इकाई :11 चतुर्थ अंक श्लोक 1 से 17 मूल पाठ व्याख्या  
इकाई :12 श्लोक 18 से 32 मूल पाठ व्याख्या

**तृतीय सेमेस्टर - एम0ए0एस0एल - 605**

**संस्कृत साहित्य की आधुनिक प्रतिभाएं-भाग-01**

**खण्ड 1. उत्तराखण्ड में संस्कृत साहित्य की आधुनिक प्रतिभाएं**

- इकाई 1 - उत्तराखण्ड में संस्कृत साहित्य की परम्परा  
इकाई 2 - विद्याभूषण श्रीकृष्ण जोशी का जीवन परिचय एवं उनका संस्कृत साहित्य में योगदान

इकाई 3 - श्री हरि नारायण दीक्षित का जीवन परिचय एवं उनका रचना संसार

इकाई 4 - लोकरत्न गुमानी का व्यक्तित्व एवं कृत्तित्व

इकाई 5 - शिवप्रसाद भारद्वाज का जीवन परिचय एवं उनकी कृतियाँ

## खण्ड 2. आधुनिक संस्कृत महाकाव्यकारों का परिचय

इकाई 1 - अट्टारहवीं शताब्दी के प्रमुख महाकाव्यकारों का परिचय

इकाई 2 - उन्नीसवीं शती के प्रमुख महाकाव्यकारों का परिचय

इकाई 3 - बीसवीं शती के प्रमुख महाकाव्यकारों का परिचय

चतुर्थ सेमेस्टर - एम0ए0एस0एल – 606

काव्यशास्त्र-भाग-02

## खण्ड - 01 काव्यलक्षण प्रयोजन काव्य हेतु

इकाई-01 प्रमुख काव्य लक्षणों की व्याख्या

इकाई-02 मम्मट का काव्य प्रयोजन

इकाई-03 काव्य हेतु

## खण्ड - 02 रस एवं अलंकार

इकाई-01 रसोत्पत्तिवाद विभिन्न मत

इकाई-02 रस भेद उदाहरण सहित व्याख्या

इकाई-03 अलंकार लक्षण क्रमिक विकास

इकाई-05 शब्दालंकार भेद सहित वर्णन

इकाई-06 प्रमुख अर्थालंकार-उपमा अनन्वय, उत्प्रेक्षा, रूपक अपहृति आदि लक्षणोंदाहरण वर्णन

## खण्ड - 03 काव्यशास्त्र की ऐतिहासिक परम्परा

इकाई-01 ध्वन्यालोक प्रथम उद्योत

इकाई-02 काव्यप्रकाश प्रथम और द्वितीय उल्लास

इकाई-03 वक्रोक्तिजीवितम प्रथम उन्मेष- साहित्य स्वरूप विवेचन पर्यन्त

इकाई-04 साहित्यदर्पण दशम परिच्छेद- उपमा, रूपक, भ्रांतिमान, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, प्रतिप, व्याजोक्ति, तुल्ययोगिता, दीपक, अप्रस्तुतप्रशंसा, विभावना, विशेषोक्ति, तदुण, अतदुण, संकर, संसृष्टि, पर्याय

चतुर्थ सेमेस्टर - एम0ए0एस0एल – 607

गद्य एवं पद्य काव्य:भाग-02

## खण्ड 1. बुद्धचरितम् प्रथम सर्ग

इकाई 1. महाकवि अश्वघोष एवं बुद्धचरितम् का विहंगावलोकन

इकाई 2. बुद्धचरितम् प्रथम सर्ग (भगवत्प्रसूति) – श्लोक संख्या – 01 से 20 तक (भावानुवाद सहित विश्लेषण एवं व्याख्या)

इकाई 3. बुद्धचरितम् प्रथम सर्ग (भगवत्प्रसूति) – श्लोक संख्या – 21 से 40 तक (भावानुवाद सहित विश्लेषण एवं व्याख्या)

इकाई 4. बुद्धचरितम् प्रथम सर्ग (भगवत्प्रसूति) – श्लोक संख्या - 41 से 60 तक (भावानुवाद सहित विश्लेषण एवं व्याख्या)

इकाई 5. बुद्धचरितम् प्रथम सर्ग, श्लोक संख्या – 61 से सर्गान्त पर्यन्त तक (भावानुवाद सहित विश्लेषण एवं व्याख्या)

## खण्ड 2. नैषधीयचरितम् प्रथम सर्ग

इकाई 1. महाकवि श्रीहर्ष एवं नैषधीयचरितम्

इकाई 2. नैषधीयचरितम् प्रथम सर्ग – श्लोक संख्या 01 से 40 तक (भावानुवाद सहित विश्लेषण एवं व्याख्या)

इकाई 3. नैषधीयचरितम् के श्लोक संख्या 41 से 80 तक (भावानुवाद सहित विश्लेषण एवं व्याख्या)

इकाई 4. नैषधीयचरितम् के श्लोक संख्या 81 से 120 तक (भावानुवाद सहित विश्लेषण एवं व्याख्या)

इकाई 5. नैषधीयचरितम् के श्लोक संख्या 120 से सर्गान्त पर्यन्त तक (भावानुवाद सहित विश्लेषण एवं व्याख्या)

इकाई 6. नैषधीयचरितम् महाकाव्य की महत्त्वपूर्ण सूक्तियों की व्याख्या

**चतुर्थ सेमेस्टर - एम0ए0एस0एल – 608**

**सिद्धान्तकौमुदी, कारक एवं समास:भाग-02**

**खण्ड – प्रथम समास प्रकरण**

इकाई. 1 समर्थः पदविधिःसूत्र से तृतीया सप्तम्योर्बहुलम् सूत्र तक उदाहरण सहित व्याख्या

इकाई. 2 अव्ययीभावे चाकाले सूत्र से-- झयः सूत्र तक व्याख्या

इकाई. 3 तत्पुरुषः सूत्र से--सप्तमी शौण्डैः सूत्र तक विस्तृत व्याख्या

इकाई. 4 दिक्संख्ये संज्ञायाम् सूत्र से अर्धर्चाः पुंसि च सूत्र तक व्याख्या

इकाई. 5 शेषो बहुव्रीहिः सूत्र से द्वन्द्वात् चु द ष हान्तात् समाहारे

**खण्ड – द्वितीय व्याकरणदर्शन**

इकाई. 1 आचार्य भर्तृहरि एवं उनके वाक्यपदीय का परिचय

इकाई. 2 वाक्यपदीयम् - कारिका एक से पचास तक व्याख्या

इकाई. 3 वाक्यपदीयम् - कारिका 51 से समाप्ति पर्यन्त तक हिन्दी में व्याख्या

**चतुर्थ सेमेस्टर - एम0ए0एस0एल – 609**

**नाटक एवं नाटिका-भाग-02**

**खण्ड -01 मृच्छकटिकम् व्याख्या**

इकाई. 1 मृच्छकटिकम् पंचम अंक श्लोक संख्या 1 से 25 मूल पाठ व्याख्या

इकाई. 2 मृच्छकटिकम् पंचम अंक श्लोक संख्या 26 से 52 मूल पाठ, एवं व्याख्या

इकाई. 3 मृच्छकटिकम् षष्ठ अंक श्लोक संख्या 1 से 14 मूल पाठ, एवं व्याख्या

इकाई. 4 मृच्छकटिकम् षष्ठ अंक श्लोक संख्या 15 से 27 मूल पाठ, एवं व्याख्या

**खण्ड -02 मृच्छकटिकम् व्याख्या एवं रत्नावली पृष्ठ संख्या**

इकाई. 1 मृच्छकटिकम् सप्तम अंक मूल पाठ एवं व्याख्या

इकाई. 2 मृच्छकटिकम् सप्तम अंक श्लोक संख्या 1 से 24 तक मूल पाठ, एवं व्याख्या

इकाई. 3 मृच्छकटिकम् सप्तम अंक श्लोक संख्या 25 से 47 तक मूल पाठ, एवं व्याख्या

इकाई. 4 रत्नावली प्रथम अंक संवाद एवं व्याख्या

इकाई. 5 रत्नावली द्वितीय अंक संवाद एवं व्याख्या

**चतुर्थ सेमेस्टर - एम0ए0एस0एल – 610**

**संस्कृत साहित्य की आधुनिक प्रतिभाएं : भाग-02**

**खण्ड-01 गीतिकाव्य एवं उपन्यास**

इकाई -01 उन्नीसवीं शताब्दी के संस्कृत गीतिकाव्य की प्रमुख प्रवृत्तियां कवि एवं उनके काव्य

इकाई -02 बीसवीं शताब्दी के संस्कृत गीतिकाव्य की प्रमुख प्रवृत्तियां कवि एवं उनके काव्य

इकाई -03 आधुनिक संस्कृत उपन्यासों का परिचय ( 19 वीं से 20 वीं शताब्दी के संस्कृत उपन्यास)

इकाई-04 आधुनिक संस्कृत लघुकथाकार-गिरधर शर्मा चतुर्वेदी, भट्ट मथुरा नाथ शास्त्री, देवर्षि कलानाथ शास्त्री, बिन्देश्वरी प्रसाद मिश्र, अभिराज राजेन्द्र, प्रभु नाथ द्विवेदी, राधावल्लभ त्रिपाठी, इच्छा राम द्विवेदी, अन्य प्रमुख

इकाई-05 संस्कृत साहित्य की आधुनिक विधाएं-गजल, आधुनिक छन्द, सानेट, हाईको, लोकगीत, युगबोधपरक कविताएं, रेडियो रूपक

**खण्ड-02 संस्कृत काव्य के आधुनिक सिद्धान्त**

इकाई -01 सौन्दर्य एवं रस सिद्धान्त- गोविन्द चन्द्र पाण्डेय, चन्द्रमौली द्विवेदी, गिरधारीलाल शर्मा

इकाई -02 अलंकार एवं चतुर्थीम सिद्धान्त- रेवा प्रसाद द्विवेदी, राधावल्लभ त्रिपाठी

इकाई-03 काव्य में सत्यता का सिद्धान्त- ब्रह्मानन्द शर्मा

इकाई-04 अन्य आधुनिक काव्यशास्त्री- छज्जू राम शर्मा, रामप्रताप वैदिक, रहस बिहारी द्विवेदी, अन्य प्रमुख